अन्यायपूर्ण व नासमझी : जम्मू एवं कश्मीर में उग्रवाद विरोधी अभियान

जम्मू एवं कश्मीर जैसे संकटग्रस्त सीमावर्ती प्रांत में, सुरक्षा बलों को न सिर्फ आतंकवाद से निपटना होता है, बल्कि सटीक एवं उचित तरीके से आतंकवाद विरोधी अभियानों को भी अंजाम देना होता है। पुंछ और राजौरी जिलों वाली पीरपंजाल घाटी के जंगली इलाकों में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच हुए भीषण मुठभेड़ों में इस साल 28 सैनिकों की मौत हुई है। बीते 21 दिसंबर को सेना के काफिले पर घातक हमले के बाद पुंछ-राजौरी इलाके में सेना द्वारा हिरासत में लिए गए तीन नागरिकों की मौत और सुरक्षा बलों द्वारा कथित यातना की वजह से पांच अन्य नागरिकों के बुरी तरह घायल होने का तथ्य वहां अपनाई जा रही है। उग्रवाद विरोधी रणनीति पर एक गहरा धब्बा है। आतंकवादी हमलों के जवाब में आम नागरिकों को निशाना बनाने वाली सुरक्षा बलों की ऐसी जघन्य कार्रवाइयां दो लिहाज से साफ तौर पर समस्याजनक हैं। पहला, यह उस शासन की अलोकप्रियता में इजाफा करता है जो उस केंद्र-शासित प्रदेश में लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित नहीं हुआ है। वहां आधे दशक से भी ज्यादा समय से प्रांतीय चुनाव नहीं हुए हैं। यह उस इलाके में आतंकवाद विरोधी कार्रवाई के खिलाफ एक झटका है जो कश्मीर घाटी के मुकाबले अपेक्षाकृत ज्यादा शांत रहा है। दरअसल, पीरपंजाल इलाका डेढ़ दशक तक अपेक्षाकृत शांत रहने के बाद पिछले दो वर्षों के दौरान आतंकवाद का सामना कर रहा है। पिछले सप्ताह घात लगाकर किए

आतंकी गतिविधियां कश्मीर से पुंछ-राजौरी तक क्यों स्थानांतरित हो गई हैं?

- हाल ही में पुंछ-राजौरी सेक्टर में सैनिकों के शहीद होने का मामला हो या कुछ महीनों पहले हुई सैन्य आतंकी मुठभेड़। इस क्षेत्र में बढ़ती आतंकी गतिविधियां चिंता का सबब बन गई हैं।
- पिछले कुछ सालों में कश्मीर क्षेत्र जोकि पारंपरिक रूप से अधिक अस्थिर क्षेत्र रहा करता था। वह अब अपेक्षाकृत शांत हो गया है। हाल के महीनों में आतंकी गतिविधियों में अधिकता जम्मू क्षेत्र में पीरपंजाल क्षेत्र में देखी गई है।

पुंछ-राजौरी सेक्टर में आतंकी गतिविधियों के पीछे संभावित कारण:

- आतंकवादी इसे कम से कम प्रतिरोध का रास्ता मानते हैं
- आतंकवाद पानी की तरह है और यह कम से कम प्रतिरोध का रास्ता अपनाता है। एक मजबूत घुसपैठ-विरोधी और आतंकवाद-रोधी ग्रिड के कारण कश्मीर आतंकवादी गतिविधियों के लिए एक चुनौतीपूर्ण माहौल बन गया है।
- इसके अलावा, यह ग्रिड पाकिस्तान के लिए प्रॉक्सी ऑपरेशन को अंजाम देना मुश्किल बना देता है। यह रणनीति उसके प्रॉक्सी हाइब्रिड युद्ध के सिद्धांत का अभिन्न अंग है।
- आतंकवादियों का फोकस पुंछ-राजौरी सेक्टर पर स्थानांतरित हो गया है, जिसका प्रॉक्सी संचालन के लिए स्थानीय समर्थन का इतिहास है।
- हालाँकि, समय के साथ समर्थन में गिरावट आई है। विशेष रूप से गुर्जर समुदाय के बीच समर्थन को फिर से विकसित करने का प्रयास किया गया है।
- पीरपंजाल (दक्षिण) का ज्यादातर जंगल और चट्टानी इलाका प्रॉक्सी गतिविधियों के लिए अनुकूल माना जाता है।

अनुच्छेद 370 निरस्तीकरण का प्रभाव:

- अनुच्छेद 370 का निरस्तीकरण कश्मीर को अलगाववादी प्रवृत्तियों के लिए कम अनुकूल बनाने वाला एक अन्य कारक है।
- चूंकि आतंकवादियों को कश्मीर क्षेत्र में काम करना मुश्किल हो रहा है। इसलिए वे छद्म युद्ध को जीवित रखने के लिए पुंछ-राजौरी सेक्टर की ओर चले गए हैं।

गए हमले के बाद जिस तरह की उग्रवाद विरोधी कार्रवाई की गई, उससे उस इलाके के निवासियों में असंतोष पैदा हुआ है जो निकट अतीत में उग्रवाद का समर्थक नहीं रहा है।

भारतीय सुरक्षा बलों के खिलाफ छेड़े गए विषम युद्ध में उग्रवादियों का एक मकसद सुरक्षा बलों को नागरिकों के मानवाधिकारों का उल्लंघन करने के लिए उकसाना और नागरिकों में इसे लेकर पनपी शिकायतों एवं आक्रोश का इस्तेमाल करके अपना समर्थन आधार बढ़ाना है। सुरक्षा बलों की ऐसी कार्रवाइयां आतंकवादियों और सीमा-पार बैठे उनके आकाओं के हाथों में खेलने जैसी हैं। दूसरा, ताकत या हिंसा की वैधता और राज्य द्वारा इसका इस्तेमाल कार्रवाईयों की न्यायसंगतता पर निर्भर करता है। बिना किसी वजह के आम नागरिकों को निशाना बनाकर हिंसा का अंधाधुंध इस्तेमाल किए जाने से लोगों के जेहन में उस वैधता के लेकर सवाल उठने लगते हैं। आम नागरिकों की मौत के बाद जम्मू एवं कश्मीर पुलिस ने अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है और सेना ने जांच का वादा करते हुए तीन वरिष्ठ अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया है। इन दोनों एजेंसियों को अब त्वरित और दृढ़ तरीके से न्याय देना होगा। घाटी में सुरक्षा एजेंसियों द्वारा "फर्जी मुठभेड़" से होने वाली मौतों और यातना के चलते सार्वजनिक आक्रोश के अलावा उग्रवाद की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है जो कानून और व्यवस्था के लिए एक बड़ी समस्या बन गई है। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवाद और जनता के गुस्से की समस्या से निपटने के लिए बिना किसी रोक-टोक के सुरक्षा-केंद्रित रवैया अपनाने की कोशिश की है। उग्रवाद-विरोधी कार्रवाई के नाम पर बार-बार होने वाले अधिकारों के उल्लंघन और अपराध इस बात के साफ सबूत हैं कि यह नजरिया कामयाब नहीं हो पा रहा है।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न : जम्मू एवं कश्मीर में आतंकी गतिविधियों के पैटर्न में आए बदलावों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कश्मीर के घाटी क्षेत्र में आतंकी गतिविधियों में कमी आई है।
2. पीरपंजाल इलाके में पिछले दो वर्षों के दौरान आतंकवाद बढ़ा है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements with reference to the changes in the pattern of terrorist activities in Jammu and Kashmir:

1. There has been a decline in terrorist activities in the valley region of Kashmir.
2. Terrorism has increased in the Pir Panjal region during the last two years.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: कश्मीर में आतंकी गतिविधियों के संचालन क्षेत्र में बदलाव देखा गया है। इसके पीछे क्या कारण उत्तरदायी हैं? कश्मीर में सेना तथा आम जनता के मध्य संबंधों में आए बदलाव पर भी टिप्पणी करें।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में कश्मीर में आतंकी गतिविधियों के संचालन क्षेत्र में आए बदलावों और उनके कारणों की चर्चा करें।
- दूसरे भाग में कश्मीर में सेना तथा आम जनता के मध्य संबंधों में आए बदलाव की चर्चा करें।
- अंत में सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।